<u>जब भारत के मूलनिवासी भिक्खु संघ के प्रशिक्षित योद्धाओं की तरह संगठित हुये तो तथागत बुद्ध की कांति के बाद पूरी दुनियां पर छा गये और जब ब्राहमणों की प्रतिकांति से हार कर बिखरे तो ठोकरों आ गये।</u>

भारत की सिन्धु घाटी सभ्यता, मोहनजोदाडों और हडप्पा आदि भारत की फली–फूली सभ्यताऐं यूरेशियन ब्राहमणों के द्वारा ध्वस्त की गई और भारत के मूल निवासियों को हराने के बाद बर्बर ब्राहमणों ने जहॉ भारत के मूलनिवासियों को पूर्णरूप से अधिकार वंचित किया, वहीं हारने वाले भारतीयों को वर्ण व्यवस्था में चतुर्थ वर्ण जोडते हुये शूद्र वर्ण में रखा, जिसका उल्लेख ऋग्वेद के पुरूषशुक्त में मिलता है कि जब ब्राहमणों ने भारत के मूलनिवासियों को हराकर गुलाम बनाया तो इन्हें वर्ण व्यवस्था में रखने के लियें चतुर्थ वर्ण शूद्र की रचना की, इससे पूर्व ब्राहमणों की त्रिवर्णीय (ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य)व्यवस्था थी।

2. जहॉ विदेशी यूरेशियन बर्बर ब्राहमणों के द्वारा भारत के मूलनिवासियों को शिक्षा, सम्पत्ति, शस्त्र रखने के अधिकार से वचिंत किया गया वहीं अनेक प्रकार से असत्य, अन्याय, अत्याचार व घृणा और नफरत का प्रचार हुआ और मिथ्यावाद, कुरीतियों और अनैतिकता व अंधविश्वास व पाखण्ड की खूब वृद्धि हुई तथा ब्राहमणी धर्म की आड में अनेक प्रकार के अधर्म होने लगे और मानवीय जीवन में पशुता और जडता की वृत्ति आ गई।

3. ब्राहमणों ने ब्राहमणी धर्म की आड में उनकी विषय वासनाओं को पूरा करने के लिये नाना प्रकार के सिद्धान्त तथा शास्त्र निकालने प्रारम्भ किये और उनके माध्यम से भारत के मूलनिवासी शूद्रों को घृणा तथा अपमान की दृष्टि से देखा जाने लगा और उन्हें मानव के बजाय केवल दास के तौर पर देखा जाने लगा। ईसा पूर्व छठी शताब्दी में बर्बर विदेशी ब्राहमणों और उनके ब्राहमणवाद की अनैतिकताओं के कारण भारत वर्ष की अवस्था अत्यंत करूणाजनक हो गई थी और ब्राहमण धर्म की आड में अश्लील और वीभत्स कर्मकाण्ड होने लगे थे, पाप और अत्याचार और व्याभिचार खूब फल फूल रहा था। यहॉ तक की पशु बलि के अलावा भारत के मूलनिवासियों की नरबलि तक दी जाने लगी थी। ऐसे समय में तथागत बुद्ध ने बर्बर ब्राहमणों तथा उनके ब्राहमणवाद के विरूद्ध क्रान्ति की शुरूआत की।

4. तथागत बुद्ध 563 ईसा पूर्व भारत में लुम्बिनी, कपिलवस्तु में जन्में थे और वह शाक्यगण से सम्बन्धित थे। शाक्यगण प्राचीन भारत में भारतीय मूलनिवासियों का एक लोकतांत्रिक गणराज्य था और शाक्यगण के अपने लोकतांत्रिक नियम व सिद्धान्त थे।

5. शून्यता में कोई विचार उत्पन्न नहीं होता है। अचेतन चित्त अर्थात बेहोशी की हालत कोई विचार उत्पन्न नहीं करती है। तथागत बुद्ध ने भारतीय समाज में व्याप्त असमानता, विषमता, दासता, घृणा, अन्याय व अत्याचारों के कारणों पर चिंतन किया, फिर

समता, समानता, स्वतंत्रता, न्याय व बन्धुता का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

6. तथागत बुद्ध के 'सम्यक समाधि' के मायने ध्यान से अलग है। तथागत बुद्ध समता, समानता, न्याय, स्वतंत्रता व बन्धुता समस्त विश्व में कायम करना चाहते थे और इसके लिये उन लोगो के प्रति करूणा भाव या दया भाव आवश्यक था जो असमानता, विषमता, अन्याय, घृणा, अपमान, दासता, अमानवीयता व अत्याचारों से पीडित थे।

7. तथागतबुद्ध के ध्यान से तात्पर्य उन कारणों की खोज व पहचान करने से जिनके कारण असमानता, विषमता, अन्याय, दासता, घृणा, अत्याचार व अमानवीयता कायम थी। तथागत बुद्ध से पहले ध्यान के साथ करूणा पर या समस्याओं के कारण जानने पर किसी ने जोर नहीं दिया।

8. तथागत बुद्ध के ध्यान अर्थात् सम्यक समाधि से तात्पर्य यह है कि असमानता, विषमता, अन्याय, दासता, घृणा, अत्याचार व अमानवीयता के कारण को परिणाम से जोडकर देखना और सामाजिक बुराईयों पर एकाग्र या तन्मय होकर चिंतन करना।

9. आसान शब्दों में कहा जाये तो सम्यक समाधि उन सामाजिक समस्याओं पर व कारणों पर ध्यान केन्द्रीत करने की एक प्रक्रिया है, जिनके कारण समाज में असमानता, विषमता, अन्याय, दासता, घृणा, अत्याचार व अमानवीयता व्याप्त है।

10. तथागत बुद्ध का ध्यान/चिंतन या बौद्धिकता वह है, जिसके उपरान्त करूणा से परिचित हुआ जा सके और व्यक्ति असमानता, विषमता, अन्याय, दासता, घृणा, अत्याचार व अमानवीयता से पीडित मानवता व मानव के प्रति अधिक दयावान व करूणावान हो जाये।

11. तथागत बुद्ध का सम्यक समाधि (Concentration) का मार्ग निस्वार्थ बौद्धिकता व चिंतन से जुडा है और उनका सम्यक समाधि का मार्ग एक सामाजिक जिम्मेदारी का अहसास कराता है। यह कोई व्यक्तिगत स्वार्थ या आन्तरिक आध्यात्मिक शान्ति का मार्ग नहीं है बल्कि यह मार्ग मानव के कल्याण के लिये असमानता, विषमता, अन्याय, दासता, घृणा, अत्याचार व अमानवीयता जैसी सामाजिक बुराईयों से लडने के लिये प्रेरित करता है और उक्त सामाजिक बुराईयों से पीडित मानवों के लिये करूणा भाव व दया भाव जगाता है।

12. वर्ष 1970 तक पाली भाषा की किसी भी शब्दकोश में विपश्यना या विपस्सना या विपासना शब्द नहीं था। विपश्यना संस्कृत का शब्द है। तथागत बुद्ध के समय व सम्राट अशोक के समय तक विपासना या विपस्सना जैसा कोई शब्द पाली में प्रचलित नहीं है।

13. जहॉ एक ओर तथागत बुद्ध '' चरथ, भिक्खुवे चारिकम, बहुजन हिताय बहुजन सुखाय लोकानुकम्पाय अत्थाय हिताय '' की बात उसके अनुयायियों को कहते हैं कि चौबीस घण्टे समाज में जाकर जागृति करो और असमानता, विषमता, अन्याय, दासता, घृणा, अत्याचार व अमानवीयता आदि समाजिक बुराईयों के विरूद्ध लडो और सामाजिक समस्याओं का निराकरण करों। वहीं विपश्यना के माध्यम से लोगो को बैठकर सोने और केवल शांत और शांत रहने का संदेश दिया जा रहा है और उन्हें शांत बैठाकर बिना हिले–डूले एक ही मुद्रा में बैठकर अपनी आती–जाती सांस को महसूस करने के निरर्थक काम पर लगाया जा रहा है। ये लोग केवल भारत को ही नहीं पूरे विश्व को बौद्धमय करना चाहते हैं परन्तु पता नहीं केवल आती–जाती सांस को बैठे–बैठे महसूस करते–करते यह भारत को व विश्व को बौद्धमय कैसे करेगें ?

14. यदि विपश्यना/ध्यान असमानता, विषमता, अन्याय, दासता, घृणा, अत्याचार व अमानवीयता आदि सामाजिक बुराईयों से लडने के लिये ध्यान करने वाले साधक को प्रेरित नहीं करता है तथा उसके मन में पीडित मानव के लिये करूणा भाव या दया भाव नहीं जगाता है तो ऐसा ध्यान/चिंतन न केवल फिजूल है बल्कि पूर्णरूप से निरर्थक है और जिन्दा संवेदनशील मानव को असंवेदनशील व जिन्दा लाश बनाता है।

15. पूरे विश्व के लिये तथागत बुद्ध के कार्य, विचार, सिद्धान्त देखने से समझ आ जाता है कि तथागत बुद्ध का चिंतन क्या है और उनकी पूरी दुनिया व मानवता के लिये चिंताऐं क्या है।

16. वास्तव में तथागत बुद्ध का चिंतन समस्याओं के कारण को जानने और समस्याओं के निराकरण से जुडा हुआ है।

17. तथागत बुद्ध ने विदेशी यूरेशियन ब्राहमणों की ब्राहमणी व्यवस्था व ब्राहमणवाद का चिंतन/ध्यान के माध्यम से बहुत सूक्ष्म और गहन अवलोकन किया और तथागत बुद्ध ने बर्बर ब्राहमणों की ब्राहमणी व्यवस्था और ब्राहमणवाद की जटिलता, सूक्ष्मता तथा प्रभाव का सही–सही आंकलन किया और जाना कि ब्राहमणी व्यवस्था और ब्राहमणवाद को ध्वस्त करने के लिये किस तरह के युद्ध तथा किस तरह की सेना और किस तरह की क्षमता और गुणों से युक्त योद्धाओं की जरूरत है।

18. तथागत बुद्ध ने उनके चिंतन से यह भी निष्कर्ष निकाला कि ब्राहमणी व्यवस्था या ब्राहमणवाद एक जटिल व्यवस्था है और ब्राहमणी व्यवस्था या ब्राहमणवाद से लडाई उससे बेहतर व्यवस्था बनाकर ही जीती जा सकती है और इसके लिये सुप्रशिक्षित व सद्‌गुणयुक्त योद्धाओं की एक फौज खडी करनी होगी अर्थात् एक उच्चतम दर्जे का सामूहिक नेतृत्व वाला व उच्च दर्जे के नैतिक मूल्यों आधारित विशाल संगठन खडा

करना होगा।

19. तथागत बुद्ध एक क्रांन्तिकारी थे तथा उनकी क्रान्ति बर्बर यूरेशियन विदेशी ब्राहमणों तथा उनके ब्राहमणवाद के विरूद्ध थी। क्रान्ति के लिये क्रान्तिकारी योद्धाओं की एक सेना की आवश्यता होती है इसलिये तथागत बुद्ध उनके भिक्खुओं को योद्धाओं की तरह प्रशिक्षित किया और वे भिक्खु संघ के कैडर कहलाये।

20. किसी सामाजिक संगठन का कार्यकर्ता होना कैडर होना नहीं है। किसी सामाजिक संगठन के कार्यकर्ता और कैडर होने में भिन्नता है।

21. सामाजिक क्रान्ति या आन्दोलन के लिये सुप्रशिक्षित समूह को कैडर कहा जाता है (A group of activist trained for a revolustionary organisation).

22. किसी सामाजिक संगठन का कार्यकर्ता होना और कैडर होने में जो भिन्नता है वह संगठन के लक्ष्य के आधार पर नहीं है बल्कि लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आवश्यक योग्यता, कुशलता, कार्य तत्परता, दृढ विश्वास, विश्वसनीयता, उत्साह, त्याग और सर्मपण की मात्रा से है। तथागत बुद्ध ने एक सामान्य गृहस्थ व्यक्ति तथा भिक्खु संघ के कैडर के लिये अलग–अलग मापदण्ड व्यवहार में रखे है, क्योकि कोई भी गृहस्थ व्यक्ति किसी भिक्खु के समान सर्मपण और त्याग का स्तर नहीं रख सकता है। जहॉ आम जनता या गृहस्थ जनता के लिये पंचशील के अनुपालन को कुछ हद तक पर्याप्त माना गया है वहीं किसी भिक्खु कैडर के लिये 10 शील का पालन करना तथा संघ के अन्य नियमों का पालन करना अनिवार्य शर्त थी। अष्टशील में भी कुछ नियम ऐसे थे जो केवल भिक्खु कैडर के लिये है।

23. एक समय भिक्खुओं ने तथागत बुद्ध से पूछा कि हम किस कारण और किस प्रकार से योद्धा हैं ? तब तथागत बुद्ध ने उन्हें जवाब दिया कि हमने बर्बर ब्राहमणों और ब्राहमणवाद के विरूद्ध एक युद्ध छेडा है और एक क्रान्ति की शुरूआत की है, इसलिये हम योद्धा हैं।

24. भिक्खुगण फिर आगे तथागत से पूछते है कि हमने युद्ध या क्रान्ति किसलिये या किस कारण से छेडी है ? तब तथागत जवाब देते है कि हमे उच्च मानवीय सद्गुण अर्थात सदाचार व नैतिक गुणों और परम बुद्धिमानी अर्थात् बौद्धिकता के लिये युद्ध या क्रान्ति की शुरूआत की है, इसलिये हम योद्धा हैं।

25. तथागत बुद्ध आगे भिक्खुगण को कहते हैं कि जहॉ नैतिक गुण व मानवीय सदाचार और बौद्धिकता खतरे में हो, वहॉ हम लडाई से दूर नहीं रह सकते हैं और मूक दर्शक बने नहीं रह सकते है तथा हमे युद्ध की शुरूआत करनी ही होगी।

26. सिन्धू सभ्यता, मोहन जोदडो व हडप्पा की खोज बताती है कि विदेशी यूरेशियन बर्बर ब्राहमणों ने भारत के मूलनिवासियों को गुलाम बनाकर उनके तमाम मानवीय हक अधिकार छीन लिये थे तथा मान स्वाभिमान या कोई खुशी उनके जीवन में नहीं बची थी और असमानता, विषमता, अन्याय, दासता, घृणा, अपमान अत्याचार और अनैतिकता का बोलबाला था।

27. तथागत बुद्ध भारत के मूलनिवासियों के तमाम हक अधिकार, सद्‌गुण, मान–सम्मान व स्वाभिमान वापस चाहते थे इसलिये तथागत बुद्ध ने बर्बर ब्राहमणों और उनके ब्राहमणवाद जनित असमानता, विषमता, अन्याय, दासता, घृणा, अनैतिकता, पाखण्ड, अंधविश्वास व अत्याचारों के विरूद्ध क्रान्ति की शुरूआत की और उनकी उक्त लडाई सत्य की असत्य पर तथा मानवता की अमानवीयता पर एंव वैज्ञानिकता की अवैज्ञानिकता पर जीत के लिये थी।

28. 185 ईसा पूर्व तथागत बुद्ध की क्रान्ति के बाद अर्थात ब्राहमण सेनापति पुष्यमित्र शुंग के द्वारा आखिरी मौर्य शासक वृहदर्थ की हत्या के बाद ब्राहमणों के द्वारा जो प्रतिक्रान्ति हुई वह इतनी भयानक है कि आज तक भारतीय मूलनिवासी बहुजन समाज उसकी दासता और दुष्परिणाम झेल रहा है।

29. डॉ0 बाबा साहेब अम्बेडकर के द्वारा प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करते हुये बताया गया है कि भारत का इतिहास विदेशी यूरेशियन ब्राहमणों की विषमतावादी और तथागत बुद्ध की मानवतावादी विचारधारा के बीच क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति के संघर्ष का इतिहास है।

30. डॉ0 बाबा साहेब अम्बेडकर के द्वारा उनकी पुस्तक '' Revoluation & Counter-Revoluation in Ancient India '' में तथागत बुद्ध की ब्राहमणों व ब्राहमणवाद के विरूद्ध की गई क्रान्ति और उक्त क्रान्ति के विरूद्ध ब्राहमणों के द्वारा की गई प्रतिक्रान्ति को बहुत विस्तार से लिखा व समझाया गया है।

31. डॉ0 बाबा साहेब अम्बेडकर के द्वारा मौर्य शासक वृहदर्थ की हत्या को एक युगान्तकारी घटना बताया गया है और कहा गया है कि मूलनिवासी बहुजन समाज के एक युग का उक्त घटना से अन्त हुआ है। वहीं दूसरी ओर विदेशी यूरेशियन ब्राहमणों के बर्बर शासन और मूलनिवासी बहुजन समाज की दासता के एक नये युग का प्रारम्भ हुआ है इसलिये ब्राहमणो की प्रतिक्रान्ति उक्त घटना एक युगान्तकारी घटना है।

32. पुष्यमित्रशुंग ने वृहदर्थ की हत्या के बाद भिक्खु संघ का विनाश करना पहला लक्ष्य रखा क्योंकि प्रशिक्षित योद्धा/कैडर संगठित शक्ति के रूप में ब्राहमणों के लिये भविष्य में खतरनाक हो सकते थे इसलिये ब्राहमणों ने खुल्लेतौर पर अंहिसा का पालन करने वाले भिक्खुओं का बडे पैमाने पर हिंसा के सहारे कत्लेआम किया और उनके सिर पत्थरों पर पटक–पटक कर तोडे गये इतना ही नहीं आज भी ब्राहमण पत्थर

पर नारियल फोडने का कार्य बौद्ध भिक्खुओं के सिर पत्थर पर तोडने के प्रतीक के रूप में संस्कार के रूप में मनाते है।

33. इतना ही नहीं ब्राहमणों ने भारत के तमाम स्तूपों तथा बौद्ध मठों पर कब्जा कर लिया और कहीं उन्हें तोड–फोड कर नष्ट कर दिया और कहीं उनमें परिर्वतन करके उन्हें मन्दिर बना दिया।

34. 8 वीं–9वी शताब्दी में शंकराचार्य ने बौद्ध मठों पर कब्जा करते हुये 4 मठों अर्थात् चार पीठ की स्थापना की और उन्हें मन्दिरों के रूप में परिवर्तित किया। उत्तॅराखण्ड राज्य के जनपद रूद्रप्रयाग में केदारनाथ व तुंगनाथ, जनपद चमोली में बद्रीनाथ व जोशीमठ तथा अल्मोडा जिले में जागेश्वर पीठ आदि इसके उदाहरण हैं और जनपद उत्तरकाशी में देहरादून से थोडा दूर कालसी में अशोक का शिलालेख व स्तम्भ यह दर्शाता है कि उत्तरॉखण्ड में बुद्ध के धम्म का व्यापक असर था। उडीसा राज्य में भुवनेश्वर के पास समुद्र के किनारे जगन्नाथ मन्दिर/पीठ भी इसी का उदाहरण है।

35. सन् 400 के आसपास चीनी यात्री फाईयान भारत आया था और सन् 629 ईसवी के आसपास हवेन्सांग भारत आया था, उन्होने भारत भ्रमण के दौरान जहॉ जहॉ वह गये प्रत्येक नगर और स्थानों पर बौद्ध और उनके स्तूप तथा मठ पाये जिसका वर्णन उनके द्वारा उनके सफरनामें में किया गया।

36. तथागत बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 100 वर्ष बाद (412–394 ईसा पूर्व) कालाशोक के शासन काल में वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगति हुई। इसका आयोजन स्थविरयश ने किया। इसका आयोजन बौद्ध भिक्खुओं के मतभेदों को दूर करने के लिये किया गया था। परम्परागत विनय में आस्था रखने वाले भिक्खुओं का सम्प्रदाय " स्थाविर या थेरवादी या हीनयान कहलाया तथा परिर्वतन के साथ विनय को स्वीकार करने वालों का सम्प्रदाय महांसघिक या महायान कहलाया। तथागत बुद्ध के महानिर्वाण के बाद कुछ अवांछनीय लोग प्रवेश कर चुके थे जो संघ में अन्दर ही अन्दर मत बढा रहे थे। ऐसे सभी भिक्खु ब्राहमणी वर्ग के थे और लगभग 1000 ब्राहमणी वर्ग के भिक्खुओं को द्वितीय बौद्ध संगति के बाद संघ से निष्कासित किया गया। इन निष्कासित ब्रहामणी वर्ग के भिक्खुओं ने कौशाम्भी में एकत्रित होकर अपनी अलग संगति की और अपना अलग त्रिपिटक बना लिया तथा अपनी भिक्खु संघ को महासंघिक अर्थात महायान नाम दिया और जो लोग तथागत बुद्ध के वास्तविक विचारों और भिक्खु संघ के नियमों का अनुपालन चाहते थें उन्हें मूल स्थविरवादी भिक्खू संघ कहा गया तथा उन्हें हीनयान दिया गया।

37. तथागत बुद्ध ने स्वंय को कभी भी एक व्यक्ति से अधिक होने का दावा नहीं किया। तथागत बुद्ध की मृत्यु के बाद भिक्खु कैडर उन्हें एक महापुरूष के रूप में देखते थें परन्तु महायान से सम्बन्धित ब्राहमणी वर्ग के भिक्खुओं ने तथागत बुद्ध को

देवता के रूप में पेश किया तथा उनकी मूर्तियों की पूजा प्रारम्भ कर दी।

38. जहॉ स्थविरवादी हीनयान सम्बन्धी भिक्खुओं के लिये आत्मा–परमात्मा, पुर्नजन्म व मोक्ष आदि बातों का कोई महत्व नहीं था। वहीं महायान से सम्बन्धित भिक्खुओं ने आत्मा–परमात्मका, पुर्नजन्म तथा मोक्ष को मान्यता प्रदान की। महायान से सम्बन्धित ब्राहमणी वर्ग की भिक्खुओं ने ही आगे चलकर भिक्खु संघ को तंत्रयान, मंत्रयान, वज्रयान, सहजयान, आदि पंथों में विभक्त किया तथा बुद्ध तथा भिक्खु संघ के वास्तविक व्यक्तित्व, विचार, व्यवहार एंव कार्यपद्वति तथा सिद्वान्तों के स्वरूप को पूर्ण रूप से बदल दिया।

39. आज हमें यही देखना है कि कहीं हम तथागत बुद्ध व भिक्खु संघ को ब्राहमणों के द्वारा बनाये गये आईने/चश्में से वैसा तो नहीं देख रहे हैं जैसा कि ब्राहमण हमें उनके स्वार्थ और षडयंत्रों के तहत दिखाना चाहते हैं ?

40. तथागत बुद्ध की क्रान्ति के बाद ब्राहमणों की प्रतिक्रान्ति के उपरान्त ब्राहमणों ने भारत के मूलनिवासियों को शिक्षा, सम्पत्ति व शस्त्र के अधिकार से वंचित करके उनके वास्तविक विचारों और गुणों तथा कार्यो को कुरूपित किया गया और तथागत बुद्ध व भिक्खु संघ के योद्धाओं के वास्तविक गुणों को छिपा दिया और तथागत बुद्ध की ऐसी तस्वीर व मूर्ति बनाई व दिखाई जिसमें तथागत बुद्ध को ऑख बन्द कर ध्यान की मुद्रा में आध्यात्मिक शांति के लिये बिठाया गया है और ऐसा दुष्प्रचार किया गया है कि तथागत बुद्ध का कोई सामाजिक आन्दोलन नहीं था बल्कि उनका आन्दोलन धार्मिक व आन्तरिंक शांन्ति के लिये था। मूलनिवासी बहुजन समाज के घरों में भी ऐसी ही तस्वीरें और मूर्तियॉ देखी जाती है। यहॉ तक की तथागत बुद्ध का मजाक के तौर पर लाफिंग बुद्धा बनाया जाता है।

41. ब्राहमणों के द्वारा षडयन्त्र के तहत ऐसी मूर्ति व तस्वीर बनाने–दिखाने के कारण शेष बचे भिक्खु व सामान्य जनता तथागत बुद्ध व भिक्खु संघ की क्रान्तिकारी व योद्धाओं की छवि धीरे–धीरे भूल गई और मानने लगी की, तथागत बुद्ध व उनके भिक्खु चाहे जो भी स्थिति हों, केवल मानसिक व आध्यात्मिक शांन्ति चाहते हों और घोर अन्याय, विषमता, असमानता, दासता, घृणा, अनैतिकता व अत्याचारों की स्थिति में भी केवल मूक दर्शक बने रहते हैं, जबकि तथागत बुद्ध व भिक्खु संघ का व्यक्तित्व, विचार, व्यवहार एंव कार्य पद्वति उपरोक्त के बिल्कुल उलट थी। उक्त स्थिति के कारण भी भारत में बुद्ध के धम्म की बहुत अधोगति हुई है।

42. तथागत बुद्ध की क्रान्ति के विरूद्ध ब्राहमणों के द्वारा की गई प्रतिक्रान्ति के बाद ब्राहमणों ने तथागत बुद्ध व भिक्खु संघ के विषय में इतना घालमेल व दुष्प्रचार और स्वरूप परिर्वतन किया है कि उसमें सच ढूढना अपने आप में पहेली जैसा है। ब्राहमणों ने ऐसा जानबूझकर किया, क्योंकि यदि भारत के मूलनिवासी तथागत बुद्ध व उनके भिक्खु संघ के वास्तविक व्यक्तित्व, विचार, व्यवहार एंव कार्य पद्वति और सिद्धान्त से

परिचित होते तो निश्चित रूप से वह उसकी ओर अपने कष्टों और समस्याओं के निराकरण के लिये दौड पडते। इसलिये जानबूझकर भ्रम पर भ्रम फैलाया गया ताकि लोग ब्राहमणवाद की गिरफ्त में रहें और बौद्ध तथा उनके धम्म की तरफ देखने के अनिच्छुक रहें।

43. कनिष्क के समय में ब्राहमणों ने तथागत बुद्ध की अनेक मूर्तियॉ बनवाई तथा उनकी पूजा करना प्रारम्भ कराया जबकि तथागत बुद्ध स्वंय मूर्ति पूजा के विरोधी थे।

44. इतना ही नहीं मूलनिवासी बहुजन समाज को शिक्षा से वंचित करके ब्राहमणों ने तथागत बुद्ध के सम्बन्ध में सस्ंकृत भाषा में लिखना प्रारम्भ किया जबकि तथागत बुद्ध के विचार व शिक्षा आमजन की भाषा पाली व मगधी में थे। यहॉ पर इस बात का उल्लेख करना भी अत्यन्त प्रासंगिक है कि संस्कृत पढने व लिखने का अधिकार केवल ब्राहमणों तक सीमित था और भारत के मूलनिवासी उसे पढ व लिख नहीं सकते थे। इस कारण ब्राहमणों ने षडयंत्र के तहत तथागत बुद्ध व भिक्खु संघ के बारे में क्या दुष्प्रचार, क्या घाल–मेल या क्या स्वरूप परिर्वतन किया, इससे मूलनिवासी बहुजन समाज के लोग लगभग 2000 वर्ष तक अंजान रहे और ब्राहमणों ने तथागत बुद्ध व भिक्खु संघ के बारे में हर वो बात लिखी एंव हर वो काम किया जो उनके ब्राहमणवाद के लिये उपयोगी था तथा बुद्ध धम्म के लिये विनाशकारी था। यही कारण है कि लोग तथागत बुद्ध व उनके भिक्खुओं को सामाजिक क्रान्तिकारी के बजाय केवल धार्मिक व आध्यात्मिक उपदेशक मानते हैं।

45. तथागत बुद्ध के विश्लेषणात्मक तर्को और समता, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बुन्धुता व मानवता और दया और करूणा के सिद्धान्तों के सामने ब्राहमणों की अंधश्रद्धा, अंधविश्वास, अनैतिकता, अन्याय, विषमता, घृणा, दासता, असमानता, ऊॅच–नीच आदि बुराई जीवत नहीं रह सकती थी, इसलिये ब्राहमणों ने पुरजोर तरीके से बुद्ध धम्म का खात्मा किया।

46. डॉ0 बाबा साहेब अम्बेडकर कहते हैं कि भारत में लोकतंत्र तथा ब्राहमणतंत्र एक साथ नहीं चल सकते हैं अर्थात यदि वास्तविक रूप से भारत में लोकतंत्र लागू किया जाये तो ब्राहमणतंत्र अपने आप खत्म हो जायेगा और यदि ब्राहमणतंत्र को लागू किया जाये तो फिर लोकतंत्र नही टिक पायेगा।

47. उसी प्रकार यदि वास्तविक रूप से तथागत बुद्ध व भिक्खु संघ का व्यक्तित्व, विचार, व्यवहार एंव कार्य पद्वति भारत में जीवत रहे तो ब्राहमणी व्यवस्था या ब्राहमणवाद जीवित नहीं रह सकता है।

48. ब्राहमणी व्यवस्था व ब्राहमणवाद तथा बुद्ध और उनके धम्म के विचार, व्यवहार, सिद्धान्त व कार्यपद्वति एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत है और विरोधाभासी

है। यही कारण है कि ब्राहमणों ने भारत से बुद्ध व उनके धम्म को भारत से खत्म करने को अनिवार्य समझा।

49. तथागत बुद्ध ने अपने अवलोकन से बताया कि भूखे पेट रहकर, एक स्थान पर बैठने से कोई लाभ नहीं है, बल्कि ऐसा करना जीवन व शरीर के लिये हानिकारक है और इससे भारत के मूलनिवासियों की कोई समस्या हल नहीं होती है और ना ही ब्राहमणों और ब्राहमणवाद से मुक्ति मिल सकती है।

50. ब्राहमणों ने तथागत बुद्ध के बारे में दुष्प्रचार किया कि उन्होने पीपल के पेड के नीचे बैठकर मेडिटिएशन किया और धार्मिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया। परन्तु वास्तविकता में तथागत बुद्ध ने गहनता से विश्लेषणात्मक तर्क के माध्यम से भारत के मूलनिवासियों व संसार के तमाम मानवों के दुख के कारणों पर चिंतन किया और यह जाना कि बर्बर ब्राहमणों व उनके ब्राहमणवाद से मुक्ति ही भारत के मूलनिवासियों को उनकी दासता और दुखों से छुटकारा दिला सकती है। तथागत बुद्ध ने मानवता के दुखों के निवारण के लिये एक नये विचार/दर्शन को ईजाद किया, जिसे बुद्ध के धम्म/बुद्धिज्जम के नाम से जाना जाता है।

51. तथागत बुद्ध ने ब्राहमणवाद के खात्में के लिये ब्राहमणवाद के प्रत्येक विचार, संस्कार और जीवनशैली को नकारा तथा मुर्खता पूर्ण आत्मा–परमात्मा की धारणा और स्वर्ग–नरक का खण्डन किया। तथागत बुद्ध ने बताया कि कोई एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को पवित्र नहीं कर सकता है और व्यक्ति जो कुछ होता है उसके विचारों के परिणाम स्वरूप होता है और विचार ही किसी को गुलाम बनाता है तो विचार ही आजादी दिलाता है। तथागत बुद्ध ने कहा कि अपनी समस्याओं के समाधान के लिये हमे स्वंय ही प्रयास करना होगा और अपना दीपक आप बनना होगा।

52. जिन लोगो को लगता है कि तथागत बुद्ध के विचार धार्मिक तथा आध्यात्मिक है तो उक्त लोग जहॉ तथागत बुद्ध की सामाजिक क्रान्ति ओर भिक्खु संघ के योद्धाओं की ब्राहमणवाद के खात्में की शूरवीरता को अनदेखा करते है। वहीं वह तथागत बुद्ध व भिक्खु संघ के महत्व व प्रासंगिकता को भी नकारते हैं।

53. यदि हम तथागत बुद्ध की ऑख बन्द कर शांत चित से बैठने वाली मुद्रा की छवि अपने मन में बनाते है और वैसी ही मूर्ति व तस्वीरें अपने घरों में लगाते हैं तथा उन्हें धार्मिक व अध्यात्म से जोडते है, तो हम वर्तमान समस्याओं के निराकरण के लिये तथागत बुद्ध से कोई लाभप्रद या उपयोगी सामग्री प्राप्त नही कर सकते हैं। बल्कि हम वैसा ही करते है जैसा ब्राहमण हमसे चाहते हैं।

54. यदि हम भारत में ब्राहमण व उनके ब्राहमणवाद के विरूद्ध पुनः कोई क्रान्ति करना चाहते हैं तो हमें तथागत बुद्ध को उनके उसी क्रान्तिकारी रूप में देखना व अपना होगा, जैसे की वे थे और भिक्खु संघ के कैडर को उन्ही शूरवीर योद्धाओं की

तरह देखना होगा जैसे की वे थे।

55. इतना ही नहीं यदि हम क्रान्ति के लिये कोई प्रभावी या देशव्यापी संगठन बनाना चाहते हैं तो हमें तथागत बुद्ध तथा भिक्खु संघ के व्यक्तित्व, विचार, व्यवहार एंव कार्य पद्वति के समझना व अपनाना होगा और सावधानी के तौर पर भिक्खु संघ के उत्थान और पतन का इतिहास भी जहन में रखना होगा।

56. यदि हम ब्राहमणवाद से मूलनिवासी बहुजनों की मुक्ति चाहते हैं तो हमें वास्तविक बुद्ध व उसके भिक्खु संघ को जीवन्त रूप में देखना व समझना होगा। परन्तु एक जलती सुलगती सच्चाई यह है कि जहॉ ब्राहमणों ने तथागत बुद्ध के विचारों व भिक्खु संघ को खत्म करने में आज तक कोई कसर नहीं छोडी है वहीं मूलनिवासी बहुजन समाज की वास्तविक बुद्ध तथा भिक्खु संघ की अज्ञानता ने भी बहुत क्षति पहुॅचाई है।

57. आज भी सामान्यतः पूरे विश्व में तथागत बुद्ध तथा भिक्खु संघ के बराबर केवल उन्हीं विचारों एंव कार्यो को जाना जा रहा है जिन्हें महायान के सम्बन्धित ब्राहमणी वर्ग के भिक्खुओं ने दुष्प्रचारित किया है और तथागत बुद्ध व भिक्खु संघ के वास्तविक स्वरूप को दुनिया से छिपाया है।

58. यहॉ पर इस तथ्य का उल्लेख करना अत्यन्त प्रासंगिक है कि जिस समाज या वर्ग का अपना कोई वैचारिक आधार नहीं होता है तो उसकी स्थिति उस घडे या मटके जैसी होती है जो बिना किसी बेस/आधार के इधर–उधर व लुढकता व भटकता रहता है और बिना किसी ठोस विचारधारा के ना तो कोई सामाजिक आन्दोलन चलाया जा सकता है और ना ही सफल हो सकता है।

59. बडी विडम्बना की बात है कि तथागत बुद्ध के समता, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बन्धुत्व व मानवता के सिद्धान्त को पूरे विश्व ने अपनाया है तथा अनेक राष्ट्रों के संविधान, नियमों–अधिनियमों में वह शामिल है, यहॉ तक की संयुक्त राष्ट्र संघ ने तथागत बुद्ध के उपरोक्त सिद्धान्तों अर्थात पंचशील सिद्धान्त को अपनाया है, वहीं बुद्ध धम्म ब्रहामणों के षडयंत्रों के कारण अपने मूल जन्म स्थान भारत से ही लुप्त प्रायः कर दिया गया है और जो कुछ दिखाई पडता है वह महायान शाखा के ब्राहमणी वर्ग के भिक्खुओं का परिवर्तित स्वरूप है, जिसे उन्होने जी–जान से ब्राहमणवाद को जिन्दा रखने के लिये दुष्प्रचारित किया है।

60. उम्मीद है कि इस लेख को पढने के बाद आप तथागत बुद्ध और उनके भिक्खु संघ को बर्बर ब्राहमणों व ब्राहमणवाद के विरूद्ध की गई क्रान्ति के लिये उन्हें जायज सम्मान देगें तथा उन्हें उनके वास्तविक स्वरूप में जानेगें–पहचानेगें और उन्हें उसी वास्तविक रूप में अपनायेगें जैसे की वे थे।

! जय भीम! जय मूलनिवासी!